Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

पारिवारिक विघटन के बीच अपनों में उपेक्षित बुजुर्ग

Pooja*

Research Scholar, Department of Hindi, Maharishi Dayanand University, Rohtak, Haryana, India

सारांश:- समकालिन दौर स्पर्धा का दौर हैं। इसमें लोग आगे बढ़ने के लिए अपनों की भावनाओं तक को दांव पर लगा देते हैं। माता-पिता अकेले होते जा रहे हैं और नई पीढ़ी भावनाओं के मामले में पीछे रह गई हैं। शहरों में तो वृद्धों के लिए वृद्धाश्रम हैं जो पैसे वाले लोगों को सभी सुविधाएं प्रदान करते हैं लेकिन गाँवों में निर्धनता और बेरोजगारी का बोलबोला हैं। वहाँ के वृद्ध माता-पिता घुट-घुट कर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जो माँ-बाप चार बेटों का पेट भर सकते थे, आज वही चार बेटे मिलकर भी एक वृद्ध माता-पिता को दो वक्त की रोटी नहीं दे सकते। सारा जीवन सम्मानपूर्वक व्यतीत करने वाले वृद्धों को घृणित जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ता हैं। आज की युवां पीढ़ी इस उपभोक्तावादी युग में अपने कर्तव्यों को ही भूलती जा रही हैं।

---------------------------------x---------------------------------

उद्देश्य:-

विघटित होते परिवारों में अपने ही प्रियजनों के बीच उपेक्षित बुजुर्गों के अकेलेपन का उद्घाटन।

प्रस्तावना:-

समाज में उपस्थित सभी सामाजिक संस्थाओं ने सबसे अधिक महत्वपूर्ण संस्था परिवार हैं। जीवन का आनंद और जीवन में रूचि का कारण एक सीमा तक परिवार ही हैं, जहाँ मनुष्य अपनत्व पाता हैं, ममत्व पाता हैं। परिवार को खोकर मनुष्य स्वंय को खो देता हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहना उसकी प्रकृति है। जिस प्रकार पक्षियों की प्रकृति है कि वे उड़े, मछलियों की प्रकृति हैं कि वे जल में तैरें, वैसे ही मनुष्य की यह प्रकृति है कि वह घर में रहे। घर की नींव पति-पत्नी के दाम्पत्य संबंधों पर निर्भर करती हैं। दोनों के संबंधों से परिवार का निर्माण होता हैं। कंचनलता सब्बरवाल के अभिमत से - " साधारण वासना से लेकर जात्याभिमान तक की भावनाओं का परिवार की स्थापना एंव निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान हैं।"1

आज आर्थिक विषमताओं के कारण जीवन में परिवर्तन आने से संयुक्त परिवार की नींव हिल गई हैं। परिवारों के विघटन की स्थिति में पारिवारिक मूल्यों को मान्यता नहीं दी जाती। पारिवारिक प्रतिमानों अवहेलना की जाती है, संबंधों में सोहार्द्र के स्थान पर कलह-संघर्ष का वातावरण उपस्थित हो जाता है। आधुनिक जीवन में पिता-पुत्र के संबंध-सूत्र एकदम ढ़ीले पड़ गए हैं। उनके संबंधों में औपचारिकता तथा कृत्रिमता का समावेश हो गया है। माँ की स्थिति परिवार में अत्यंत दर्दनाक हो गई है। इससे बड़ी त्रासदी और क्या हो सकती है जब माँ भी अनावश्यक सामग्री समझी जाने लगे। "आधुनिक जीवन के जटिल परिवेश में न केवल समाज का विघटन हो रहा है, वरन् उससे भी अधिक परिवार का विघटन लेखक की गम्भीर आंतरिक समस्या बनी हुई है।"2

इस उपभोक्तावादी दौर में वृद्धों को मृत्यु का इतना भय नहीं रहता जितना अकेलेपन का डर उन्हें सता रहा है। स्वतंत्रता से पहले वृद्ध स्त्री-पुरूष घर के मुखिया होते थे, चाहें वे कमायें या न कमायें। परिवार का कोई भी सदस्य उनकी मर्जी के बिना कुछ नही कर सकता था। इस समय पैसा गौण था। घर का संगठन व बुजुर्गों का सम्मान बड़ा माना जाता था। लेकिन समकालीन युग स्वार्थ, धनलोलुप्ता, अहंकार, अनुदारता, अनैतिकता एवं अधर्म का है। माता-पिता व अन्य संबंधियों के साथ जो भावनात्मक रिश्ते थे वे भी समाप्त हो गए हैं। केवल मैं और मेरा परिवार रह गया हैं। अपने पैसों को दूसरों पर क्यूँ खर्च करूं बल्कि जितना उन से लिया जा सकता है उतना छीन लूं। वृद्धों का अकेलापन इसी मानसिकता का परिणाम है।

आज के युग में जहाँ युवा अपने जीवन में प्रगति कर रहे हैं, वहीं बुजुर्ग अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में अकेलेपन से जूझ रहें हैं। उच्च शिक्षा के लिए घर से बाहर निकले बच्चों की गृह वापसी कम ही होती है। आज संयुक्त परिवार लगभग समाप्त ही होते जा रहे है। मथुरा के वृद्धाश्रम तो बहुत चर्चित

www.ignited.in

है, वहाँ इस्कॉन मंदिर की तरफ से बहुत से वृद्धाश्रम बने हुए है। इनमें कितने ही परिवार सम्पन्न होते हुए भी बुजुर्गों को वृद्धाश्रम में छोड़ जाते हैं। कमोबेश यही हाल देश के अन्य वृद्धाश्रमों का भी है।"3

वृद्धाश्रमों से जूझते लोगों की पीड़ा किसी से अछूती नही है। युवा पीढ़ी व बुजुर्गों के टकराव, तिरस्कार, अपमान किस हद तक बढ़ गए हैं, इस का अनुमान वृद्धाश्रमों में बढ़ते वृद्धों की संख्या से लगाया जा सकता है। जीवन संध्या के सूनेपन, अकेलेपन से क्षुब्ध, उस पर अपमान और अवसाद से घिरे, बोझ बनने के अहसास से दुःखी होकर या तो वे स्वंय घर से निकल जाते हैं या उन्हें इसके लिए मजबूर कर दिया जाता है कि जैसे भी हो, अपने लिए कोई वैकल्पिक व्यवस्था कर लें। आज देश में फैला वृद्धाश्रमों का जाल हमारे समाज में उभरती इसी नई स्थिति का परिणाम है।

सामान्यतः पश्चिमी देशों में औसत आयु-दर 75 तक और जापान में तो 80 तक पहुँच गई है। भारत में भी 60-65 आयु के ऊपर वरिष्ठ नागरिकों की संख्या दिनों दिन बढ़ रही है। एक ओर जहाँ ये समृद्धि का लक्षण है, आधुनिक उन्नत चिकित्सा-सेवाओं का वरदान है, वहीं दूसरी ओर अपमानजनक स्थिति (कहीं दारूण भी) में जीने वाले वृद्धों के लिए घोर पीड़ादायक अभिशाप भी है। पश्चिमी देशों में वृद्धों की मानसिकता परिवार से अलग या वृद्धाश्रमों में रहने की बन चुकी है, क्योंकि वहाँ इसका व्यापक चलन है। भारतीय संस्कार में यह संस्थागत व्यवस्था उनके लिए अभी सहज स्वीकार्य नही हो पायी है, जबकि सामाजिक स्थितियाँ हमें उसी ओर ले जा रही हैं।

बुजुर्गों के लिए परिवारों में जगह दिनोंदिन सीमित होते जाने की समस्या अब महानगरों तक ही सीमित नही रही, छोटे शहरों, कस्बों तक भी फैल गई है। घरों के बाहर अच्छी नौकरियों के आकर्षण में अक्सर ग्रामीण युवा भी अपना घर-परिवार छोड़कर, बाहर जा बसते हैं और यह समस्या नगरों से गाँवों तक विस्तार पाती जा रही है। लेकिन परिवार बंटने पर भी कस्बों के घरों में पीछे छूटे वृद्ध उतने अकेले नही पड़ते जितने कि बड़े नगरों के, क्योंकि वहाँ अभी सामुदायिक जीवन बचा है। महानगरों में तो अब भरपाई के तौर पर अकेले वृद्धों की देखभाल व सेवा के लिए नौकर-चाकर भी दिनोंदिन दुर्लभ होते जा रहे हैं। मध्यम व निम्न वर्ग उनका खर्च वहन नही कर सकता और वृद्धों के लिए आज नौकर पर भरोसा करना भी कठिन हो गया है, इसलिए वृद्धाश्रमों का चलन बढ़ा है।

वृद्धावस्था जिंदगी का अंतिम पड़ाव है। वृद्धावस्था में अकेलापन वृद्धों के लिए जानलेवा साबित हो रहा है। समकालीन समय में इसी अकेलेपन के कारण वृद्ध मानसिक रोगों के शिकार हो रहे हैं। हम अपने चारों ओर अनेक दुःखी, लाचार एवं असहाय वृद्धों को देखते हैं - उनके पास धन सपंत्ति है, जवान बेटे-बेटियाँ और बहूँए भी हैं फिर भी अकेलापन झेलना उनकी विवश्ता है। 'हमारा घर' कहानी में मिस्टर बंसल के बेटे विदेशों में जा बसे हैं। उनकी पत्नी को कैंसर हो जाता हैं। वे अपने अंतिम समय में अपने बच्चों से मिलना चाहती हैं यथा "मुझे अब ज्यादा दिन तो जीना नही हैं। चाहती हूँ, एक बार पूरे परिवार के साथ दिन बिताऊँ।"4 लेकिन उनके बेटे उनकी अंतिम साँस तक उनसे मिलने नही आते। आखिर में कई महिनों से बेटों के इंतजार में खुली आँखें एक दिन मुंद जाती हैं।

समाकालीन दौर स्पधा का दौर है। युवाओं को कैरियर बनाने के लिए घर से बाहर विदेशों में भी जाना पड़ता हैं। माँ-बाप पुश्तैनी घर को छोड़कर बच्चों के साथ जाने को तैयार नही। दूर रहने के कारण बच्चों के विचार माँ-बाप के विचारों से मेल नही खाते और न चाहते हुए भी कहीं न कहीं टकराव हो ही जाता हैं। किसी भी शहर की पौष कॉलोनी में झांक कर देखिए अनेक कोठियाँ ऐसी मिलेंगी जहाँ वृद्ध माता-पिता अकेले पड़े हैं। लड़का एक हो या अनेक त्यौहारों पर भी आने का कष्ट नही करते। माता-पिता के बेचैन हृदय को बेटे कभी नही समझना चाहते। इसका एक एक कारण यह भी है कि आज युवकों ने अपना एक अलग परिवार मान लिया है, जिसमे वह, पत्नी व बच्चें शामिल हैं और कोई दूसरा नही। एक कहावत भी हैं कि बच्चे की सेवा में लगा पिता बच्चे के ठीक होने पर पूछता है-बेटे जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा तब तुम मेरी सेवा करोगे न, तब बच्चे का जवाब यही था-"नही पिताजी मैं आपकी सेवा क्यूं करूंगा, मैं तो अपने बच्चों की सेवा करूंगा।"5

सभी कामयाब संतानों के माँ-बाप की यही स्थिति है- अकेलापन। अकेलेपन के साथ-साथ उदासी और पराजय का बोध जानलेवा साबित हो रहा है। वृद्ध सुबह सैर-सपाटे पर जाते हैं। परिचितों के साथ स्वास्थ्य व मौसम की बात के बात अनिवार्यतः अकेलेपन पर ही आ जाते हैं। समकालीन दौर में बच्चों की समस्या वृद्धों के जीवन में भयानक सन्नाटा बुन रही हैं। माता-पिता को दूर रखना आज बड़प्पन के प्रदर्शन, शौक, फैशन में शुमार हो गया है। 'हेल्पेज इंडिया' के सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्य है कि "दिल्ली में अकेले रहने वाले 50-60 प्रतिशत वरिष्ठ नागरिकों के बच्चें इसी शहर में या आस-पास के शहरों में रह रहे हैं पर वे माँ-बाप को साथ नही रखना चाहते। कभी-कभी आकर वृद्ध माँ-बाप से मिलने का समय भी

अधिकतर के पास नही होता, केवल उनकी बीमारी में या विशेष अवसरों पर ही उनके पास आते हैं।"6

वृद्धों के अकेलेपन का कोई अकेला कारण जिम्मेदार नही है, कई ऐसे कारण है जिनकी वजह से उन्हें अकेलापन झेलना पड़ रहा हैं। आज के समाज की वल्लरी को अवमूल्यन की खाद मिल रही हैं। चारों ओर लूटमार, नोंच-खचोंट, चोरी-बेईमानी जैसी कुप्रवृतियों का बोलबाला हैं। दुर्भाग्यवश वृद्धावस्था में अकेलेपन की बढ़ती समस्याओं का निदान और भी जटिल होता जा रहा हैं। अपराध और आतंक की बढ़ती घटनाओं में वृद्धजन आपराधिक हमलों के शिकार हो रहे हैं। आजकल जमीन-जायदाद तथा पैसे-गहनों के लोभ में उन पर बढ़ता जानलेवा हमला भी घोर चिंता का विषय बना हुआ हैं।

वृद्धों की मुख्य समस्यायें होती है: शारीरिक और आर्थिक सुरक्षा, बीमारी और अशक्तता, अकेलेपन का अहसास, शून्यता से उपजा अवसाद आदि। जो लोग वृद्धावस्था को सहज रूप से स्वीकार कर सक्रिय रहते हैं वे इनसे बचे रहते है, अन्यथा अवसाद उन्हें चिड़चिड़े स्वभाव वाला, मनोरोगी तक बना देता हैं। वृद्धावस्था में बच्चों से अलग रह कर भी जब पति-पत्नी साथ रहते हैं तो अशक्तता के बावजूद वे परस्पर सुख-दुःख बौट लेते हैं। एक-दूसरे के सहायक बनकर हर स्थिति को जैसे-तैसे झेल लेते हैं पर बहुत कम दंपति ही मृत्यु तक साथ रह पाते हैं। कम या अधिक आयु मे जब एक चला जाता है तो उनके अकेलेपन का कष्ट और भी बढ़ जाता हैं।

निष्कर्ष:-

वृद्धावस्था की समस्या एक सामाजिक समस्या बन गई है। आज का युवा बुजुर्गों के प्रति अपने कर्तव्यों को नजरअंदाज कर रहा है। वृद्धावस्था में बुजुर्गों की विशेष देखभाल, अपनेपन की जरूरत होती है। यहाँ एक-दूसरे के जज्जबातों को समझना बहुत जरूरी हो जाता है। बुढ़ापे का सुखद-दुखद होना (विशेष स्थितियों को छोड़कर) बहुत कुछ बुजुर्गों की सोच, सक्रियता और नई पीढ़ी के सहयोग पर निर्भर करता है। नई पीढ़ी को यह अहसास कराने की भी आवश्यकता है कि बुजुर्ग बोझ नही आशीर्वाद होते है। सामंजस्य दोनों पीढ़ियों को मिलाना है ताकि वृद्धावस्था एक सुखद पड़ाव बना रहे।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. कंचनलता सब्बरवाल, समाजशास्त्र, पृ. 258

2. डॉ. नरेन्द्र नाथ सिहं, समकालीन हिंदी का सामाजिक सरोकार, पृ. 67

3. वृद्धावस्था-जीने का नजरिया, सपने मेरे अपने, spaneshashi.blogspot.in/2016/12/blog-16.html?m=1

4. कमल कुमार, मदर मैरी और अन्य कहानियां, पृ. 11

5. आचार्य कृष्ण कुमार गर्ग: वृद्धावस्था में सुख शांति से कैसे जिएं, पृ. 52

6. आशा रानी ब्होरा, औरत: कल, आज और कल, पृ. 125

Corresponding Author

Pooja*

Research Scholar, Department of Hindi, Maharishi Dayanand University, Rohtak, Haryana, India